अभियान : टाइटन

सतीश बलराम अग्निहोत्री

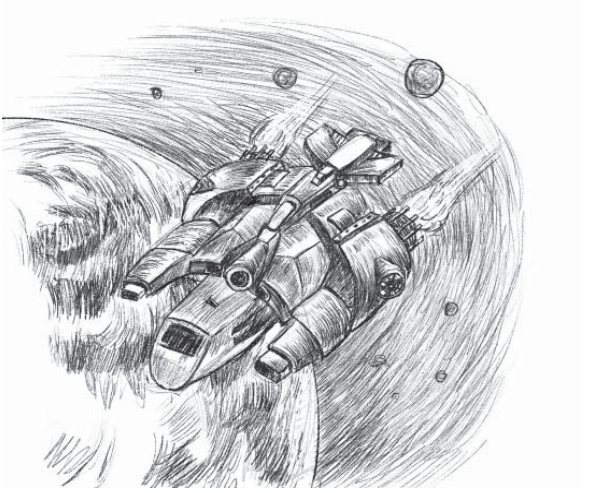

प्रोफेसर अभियान आज भी देर से घर लौटे। आजकल सारा ही मामला गड़बड़ हो रहा था। इतने दिनों बाद जब दिमाग में प्रयोग की रूपरेखा स्पष्ट होकर उभरी तो पता चला कि मनजीत के हाथों लेज़र-टॉर्च ही टूट गई। लेज़र किरणों के अभाव में प्रयोग शुरू करना सम्भव ही नहीं था।

"हफ्ते भर की छुट्टी!" वे मन-ही-मन बुदबुदाए। हठात् उन्हें अपने मित्र सदाशिवन की याद आई, जिन्होंने उनसे कहा था, "तुम्हारी शनि की साढ़े-साती शुरू हो गई है, अभियान।"

"शनि की साढ़े साती!" उस अन्यमनस्क स्थिति में भी अभियान को हँसी आ गई। शनि के उपग्रह टाइटन पर तो हमारी कॉलोनी बसी हुई है और लोग अभी भी शनि की दशा से चिपके हुए हैं। उन्होंने कई बार सदाशिवन से कहा था, "यार शिवन, अकेले शनि के ही नौ उपग्रह हैं। उनमें सबसे बड़ा उपग्रह है, या चाँद कह लो तुम, टाइटन। अब उस टाइटन पर हमारे जागतिक अन्तरिक्ष विज्ञान केन्द्र की अपनी प्रयोगशाला है। वहाँ कौन-सी साढ़े-साती आएगी? और जो बच्चे टाइटन पर पैदा हुए हैं, उनकी कुण्डली में क्या पृथ्वी की दशा होती है?"

प्रोफेसर अभियान जाने-माने अन्तरिक्ष वैज्ञानिक थे और अन्तरिक्ष संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में चोटी के विशेषज्ञ।

जागतिक अन्तरिक्ष विज्ञान केन्द्र की आजीवन सदस्यता उन्हें मिली हुई थी। पिछले कई महीनों से सौरमण्डल से परे स्थित ग्रहों के बीच

आपसी संचार-व्यवस्था कायम करने की समस्या पर उनका शोधकार्य चल रहा था। वे अपनी लगन और अथक परिश्रम के लिए प्रसिद्ध थे। फिर भी लेज़र-टॉर्च के टूट जाने से उन्हें काफी निराशा हुई थी।

हेलि-गैरैज की छत पर जब उन्होंने अपना हेलिकॉप्टर उतारा तो उन्हें अनुमान नहीं था कि डमरे साहब आए होंगे। वैसे यह उनके आने का मौसम था ज़रूर। डमरे साहब उनके घनिष्ठ मित्र और शहर के ख्यातिप्राप्त स्कूल 'विज्ञान' के प्रिंसिपल थे। उनके घनिष्ठ सम्बन्धों की एक और कड़ी थी – प्रो. अभियान हर वर्ष उनके स्कूल में तीन महीने फिज़िक्स पढ़ाते थे, वह भी छठी और सातवीं कक्षा को। यह क्रम 7-8 वर्षों से अनवरत चला आ रहा था। अभियान के सभी मित्र उनकी इस खब्त का मज़ाक उड़ाया करते पर उन्हें इसमें मज़ा आता था। वे कहते थे, "अरे, अन्तरिक्ष वैज्ञानिक हुआ तो क्या हुआ? इन बच्चों को पढ़ाना आसान थोड़े ही है! चुनौती है, चुनौती! पढ़ाकर देखो, पता चलेगा, कितना सन्तोष मिलता है।" तथ्य तो यह था कि अन्य अभिभावकों की तरह ही अभियान का मज़ाक उड़ाने वाले दोस्त भी अपने बच्चों का दाखिला 'विज्ञान' में ही कराते, कम-से-कम छठी और सातवीं में।

लेकिन अभियान आज 'चुनौती', 'सन्तोष' वगैरह भावनाओं से परे थे। प्रारम्भिक बातचीत के बाद जैसे ही इस साल की कक्षाओं का ज़िक्र छिड़ा, वे बड़े ही थके स्वर में बोले, "यार डमरे, इस साल के लिए छोड़ दो। मैं लम्बी छुट्टी लेकर हिमालय पर जाने की सोच रहा हूँ। इस कमबख्त प्रयोग ने दुखी ज़रूर कर रखा है।"

डमरे ताड़ गए कि आज मामला कुछ गम्भीर है, वरना इस काम के लिए प्रोफेसर मना नहीं करते। उन्होंने विषय टाल दिया।

उनके जाने के बाद अभियान कुछ देर अनमने-से बैठे रहे। उन्हें भी अपनी नकार अच्छी नहीं लगी थी। पर जल्दी ही उन्होंने यह विचार मन से झटक डाला।

अपने यांत्रिक मानव 'स्वचालित' को ढेर सारी सूचनाएँ देने के बाद अभियान अपने लिहाफ में दुबक गए। जल्द ही उनकी आँख लग गई।

'स्वचालित' काफी मज़ेदार यांत्रिक मानव, यानी कि रोबोट था। अभियान ने उसके दिमाग से एक सशक्त कंप्यूटर जोड़ रखा था, जिसकी वजह से वह उन्हें पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर, सबका काम देता था। उसकी खनखनाती धातुई हिन्दी सुनने वालों का काफी मनोरंजन करती थी। कई बार लोग उससे जान-बूझकर एक ही सवाल का जवाब बार-बार पूछते। दो बार जवाब देने के बाद तीसरी बार वह कहता, "मज़ाक मत कीजिए, जनाब!"

* * *

"सॉरी प्रोफेसर, शुभ प्रभात, टाइटन से अ.ब.स... सॉरी प्रोफेसर, शुभ प्रभात, टाइटन से अ.ब.स..." स्वचालित उनके कान के पास तेज़ वॉल्यूम में दोहराए जा रहा था। अभियान हड़बड़ाकर उठे। अ.ब.स. यानी अन्तिम बचाव सन्देश! उन्होंने स्वचालित का मुँह ऑफ किया और जल्दी-जल्दी टेलिप्रिंटर की तरफ भागे।

"हे विज्ञान!" गुप्त भाषा में भेजा गया सन्देश पढ़ते-पढ़ते वे बुदबुदाए। टाइटन पर कोई अनजान अन्तरिक्ष दानव आ धमका था। मुकाबला असम्भव... अनजान जीव अपने ग्रह से सम्पर्क की कोशिश में... फिर सौरमण्डल पर कब्ज़ा... रोकना आवश्यक... फिलहाल उसका संचार ट्रांसमीटर क्षतिग्रस्त... ठीक होने से पहले बचाव ज़रूरी... तुरन्त आएँ... राव0173। डॉ. राव टाइटन पर स्थित प्रयोगशाला के संचार विभाग के अध्यक्ष थे।

जाना ज़रूरी था। अभियान ने तुरन्त जेनेवा स्थित जागतिक अन्तरिक्ष विज्ञान संस्था के अध्यक्ष प्रोफेसर गॉस से सम्पर्क बनाया। प्रोफेसर गॉस को स्थिति की जानकारी देने के बाद अभियान ने जल्दी-जल्दी स्वचालित के दिमाग में कई निर्देश भरे ताकि उनकी अनुपस्थिति में वह रोज़ाना के सारे कामों का खयाल रखे। चलने से पहले उन्होंने अन्य वस्तुओं के अलावा अपनी शक्तिशाली लेज़र बन्दूक भी ले ली। यह बन्दूक लेज़र किरणों के बहुत ही शक्तिशाली पुंज मनचाहे निशाने पर फेंक सकती थी और कठोरतम धातुओं में सेकण्डों में छेद कर देती थी।

कच्चतीवु के रॉकेट अड्डे पर उनका यान तैयार था। कच्चतीवु, जो कभी भारत और श्रीलंका के बीच वाद-विवाद का विषय था, आज एक अन्तर्राष्ट्रीय रॉकेट अड्डे का काम देता था।

टाइटन तक पहुँचने में कोई पाँच घण्टे लगने वाले थे। अभियान ने राव को कोई पूर्व सूचना दिए बिना पहुँचना ही उचित समझा। उड़ान के कोई दस मिनट बाद उन्होंने रॉकेट के पूरे नियंत्रण को स्वचालित उड़ान-व्यवस्था के हाथों सौंप दिया। यह व्यवस्था कंप्यूटर नियंत्रित थी और लक्ष्य निर्धारण-निर्देश मिल जाने पर अपने आप सारा मार्ग तय कर लेती। किसी भी त्रुटि के सुधार का काम भी वह अपने आप कर लेती। अभियान ने टाइटन से सम्बन्धित फाइल निकाली और उस पर नज़र दौड़ाने लगे।

अलार्म की तेज़ आवाज़ से उनके विचारों को एक झटका लगा। नियंत्रण-कक्ष के बाहर लाल संकेत उभर आया था और उसके नीचे लगी स्क्रीन पर हरे रंगों में समस्या लिखी हुई थी –

तीव्र चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव। त्रुटि सुधार प्रयत्नों के बावजूद यान एक

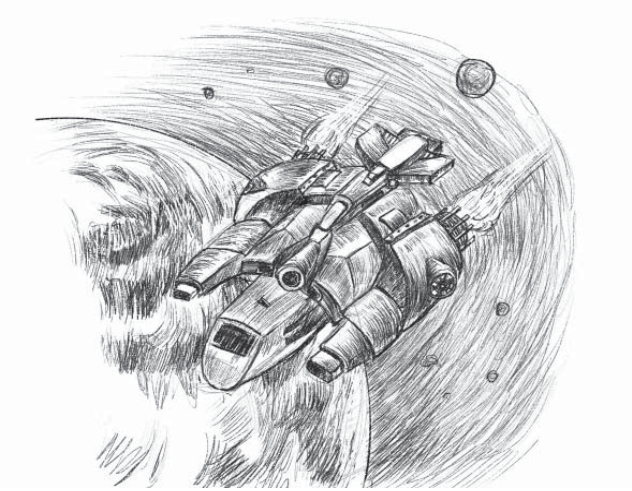

दिशा में खिंचता जा रहा है। प्रयत्न विफल। आशंकित खतरा। टाइटन तल से दूरी पाँच सौ किलोमीटर।

उड़ान व्यवस्था आम तौर पर अड़चनों का समाधान खुद कर लिया करती थी। पर यह समस्या आम नहीं दिखती थी।

प्रोफेसर अभियान नियंत्रण-कक्ष में घुसे। उनकी नज़र पहले चुम्बकीय क्षेत्र-मापी पर पड़ी। "अरे बाप रे, इतना तीव्र क्षेत्र तो टाइटन के रास्ते में था नहीं। और वह भी टाइटन से केवल तीन सौ किलोमीटर दूर?" उन्होंने यान को मोड़ा और खिंचाव की दिशा के विरुद्ध ले जाने की कोशिश करने लगे। अब जाकर उनकी समझ में आया कि उनका पाला किसी अप्राकृतिक चीज़ से पड़ा है। जितना ही वे यान को खिंचाव की दिशा से दूर ले जाने की कोशिश कर रहे थे, चुम्बकीय क्षेत्र उतना ही तीव्र होता जा रहा था। "फँस गए!" अभियान ने सोचा। यह ज़रूर उस अन्तरिक्ष दानव की करामात होगी। उन्होंने टीवी कैमरा ऑन किया और चारों तरफ 'नज़र' दौड़ाने लगे।

टाइटन पर पहली बार मौसम इतना साफ था। रेतीली ज़मीन के एक लम्बे सपाट पट्टे के दूसरे छोर पर वह जीव खड़ा था, जिसकी ओर यान असहाय-सा खिंचता चला जा रहा था। अन्ततः यान टाइटन पर पहुँचकर हल्के-हल्के झटके खाता रहा।

पहली कोई बात यदि अभियान के दिमाग में आई तो वह थी लेज़र-बन्दूक के इस्तेमाल की। उन्होंने बन्दूक ऑन कर निशाना साधा। पर यह क्या? जीव के हरे रंग के शरीर पर जहाँ भी लेज़र किरण पड़ रही

थी, वहाँ एक बड़ा-सा नारंगी धब्बा चमकने लगता था। रुपए के सिक्के के आकार का। प्रोफेसर ने विभिन्न स्थानों पर निशाना साधा पर नतीजा वही। जीव पर लेज़र किरणों का कोई प्रभाव पड़ता नज़र नहीं आ रहा था। उन्होंने झल्लाकर बन्दूक एक ओर फेंक दी।

यान लगभग रुक गया था। अभियान चुपचाप खड़े थे – जीव के अगले कदम की प्रतीक्षा करते हुए। तभी दरवाज़ा खुला और आवाज़ आई, "स्वागत है, प्रोफेसर अभियान। मुझे तुम्हारे आने की सूचना पहले से थी। कहो तो 0173 का सारा सन्देश सुना दूँ।"

दरवाज़े पर वह जीव खड़ा था। मटमैले, बहुत ही विचित्र हरे रंग की चमड़ी। सारा शरीर ज्यामितीय आकार का – मानो मशीन से बना हो। घनाकार सिर, सिलिंडरनुमा धड़, गोल-गोल हाथ-पैर और बटननुमा उँगलियाँ।

"तुमने दरवाज़ा कैसे खोल लिया?" अभियान अपना आश्चर्य छिपा नहीं पाए। "और तुम हिन्दी कैसे बोल लेते हो?" और भी कई प्रश्न उभरे थे उनके दिमाग में।

"आसान बात है। उत्तर क्रमांक एक – मैंने ध्वनि-तरंगों के सहारे दरवाज़े का ताला पढ़ लिया और खोल दिया। उत्तर क्रमांक दो – मैंने तुम्हारे दो-तीन सहयोगियों के दिमाग खोलकर पढ़ लिए और अपनी याददाश्त में भर लिए। अब उन्हें जो कुछ मालूम है, मुझे भी मालूम है।"

"तुमने दिमाग क्या किए?" अभियान का कलेजा मुँह को आ गया।

"खोलकर पढ़ लिए।" जीव ने सपाट लहज़े में दोहराया। "अब मतलब की बातें करते हैं। तुम्हें सितारों के बीच सन्देश भेजने की व्यवस्था की कितनी जानकारी है?"

अभियान पशोपेश में पड़ गए। क्या कहें? 'है'? 'नहीं है'? 'थोड़ी-सी है'? 'अगर 'है' कह दूँ तो कहीं यह मेरा दिमाग खोलकर न पढ़ ले।' हालाँकि, खोलकर पढ़ने की बात उनके पल्ले पड़ी नहीं थी फिर भी उनके शरीर में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई। 'अगर 'नहीं है' कह दें तो कहीं वह पृथ्वी पर ले जाने को मजबूर न कर दे।' पशोपेश की स्थिति में भी उन्होंने जल्दी विचार बदला। कहीं जीव को उनके विचारों का पता न चल जाए। फिर साहस जुटाकर बोले, "मुझे थोड़ी-सी जानकारी है, पर पता नहीं तुम्हारे कितने काम आएगी। लेकिन पहले अपनी समस्या तो बताओ। हम लोग ज़रा ढंग से बैठकर बातें कर लें। फिर तय करेंगे, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ।"

"तुम पहले व्यक्ति हो, जिसने सहयोग की बात की है। बाकी सभी तो आक्रमण का रुख अपनाए हुए हैं।"

जीव ने कहा, "वैसे तुम भी मुझ पर लेज़र किरण फोकस कर रहे थे। पता नहीं तुम लोग उन चीज़ों को हथियार क्यों समझते हो! मेरे खोल पर उसका कोई असर नहीं होता। मैं उन किरणों की ऊर्जा को तुरन्त अपने बदन पर चारों तरफ फैलाकर कुन्द कर देता हूँ। खैर, जाने दो।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" अभियान ने पूछा।

"तुम्हारी भाषा में मेरा नाम है संकेतक तीन तेरह सोलह सौ छप्पन..." कई विचार अभियान के दिमाग में एक-साथ कौन्ध गए। जीव का भावहीन लहज़ा, दिमाग खोलकर पढ़ना, और याददाश्त में भरना... कहीं यह यांत्रिक मानव तो नहीं? बहुत ही विकसित किस्म का, पर यांत्रिक - असली मानव नहीं। अपने मनोभावों को छिपाते हुए वे हँसे, "इतना बड़ा नाम? अगर मैं तुम्हें तीन-तेरह कहूँ तो?"

"मुझे मालूम है प्रोफेसर, तुम्हारी भाषा में इस संख्या का मतलब भागना भी होता है। पता नहीं तुम लोग संख्याओं से ऐसे अर्थ किस तरह जोड़ देते हो! मुझे अपनी याददाश्त में से सही अर्थ खोजने में बहुत उलझन होती है।"

* * *

तीन-तेरह से जो जानकारी मिली वह बहुत उत्साहवर्धक नहीं थी। सौरमण्डल से कोई तीन प्रकाश वर्ष की दूरी पर एक ग्रह पर उन लोगों की बस्ती थी। यानी करीब $3x10^{13}$ किलोमीटर (प्रकाश एक वर्ष में करीब 10^{13} किलोमीटर की दूरी तय करता है)। उनका सारा काम परमाणु ऊर्जा से चला करता था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में उनका परमाणु ईंधन समाप्त होने को आया था। यह ज़रूरी था कि आगामी 50-60 वर्षों में वे ऐसे किसी ग्रह पर जा बसें जहाँ उन्हें

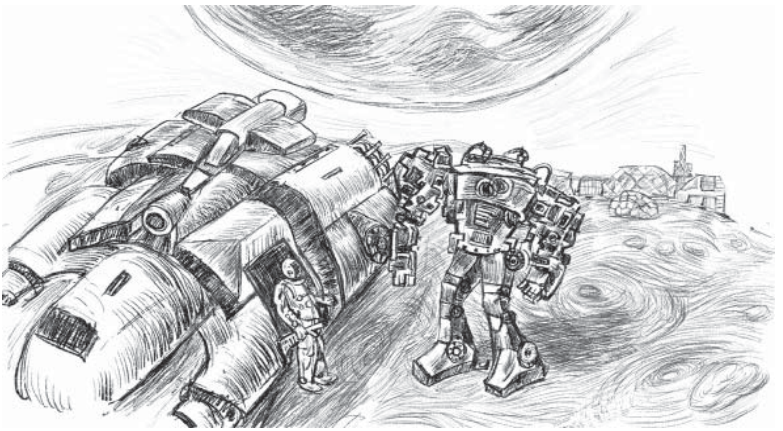

काफी मात्रा में परमाणु ईंधन मिल सके। उनके यान अन्तरिक्ष में चारों ओर ऐसे ही किसी ग्रह की तलाश में घूम रहे थे। तीन-तेरह का यान भी उन्हीं में से एक था, जो कुछ खराबियों के कारण टाइटन पर उतरने को मजबूर हुआ था। सन्तोष की बात थी कि टाइटन पर उतरते समय उसके यान और ट्रांसमीटर, दोनों को बुरी तरह क्षति पहुँची थी। बहरहाल, जीव को अब मालूम हो चुका था कि पृथ्वी पर थोरियम धातु – जो कि एक अच्छा परमाणु ईंधन है – का बहुत बड़ा भण्डार है। अब उसका ध्येय था कि जल्दी ट्रांसमीटर की मरम्मत करे और संकेत उपकरण से अपने ग्रह को सन्देश भेजे।

जिस ग्रह का उसने ज़िक्र किया था, वहाँ की सभ्यता बहुत ही विकसित मालूम होती थी। विज्ञान और टेक्नोलॉजी में उन्होंने बहुत अधिक प्रगति कर ली थी। ऐसे लोगों के धरती पर आने का परिणाम एक ही था – मानव जाति के लिए गुलामी।

तीसरी बात जो अभियान के पल्ले पड़ी, वह यह कि जीव था तो काफी विकसित किस्म का, लेकिन यांत्रिक मानव था। यह बात महत्वपूर्ण थी क्योंकि यांत्रिक मानव के दिमाग में कंप्यूटर होने के कारण सोच-विचार कर झूठ बोलना नहीं भरा था। हाँ, एक भावना उसके दिमाग में कूट-कूट कर भरी हुई थी – उसके अपने ग्रहवासियों की श्रेष्ठता का दावा। हालाँकि, वह सुख-दुख, हँसी-मज़ाक आदि भावनाओं से परे था, पर अपने ग्रह के निवासियों की श्रेष्ठता के बारे में दावा करते समय उसके लहज़े में एक कृत्रिम घमण्ड का भाव साफ झलकता था। उसे बनाने वाले वैज्ञानिकों ने अवश्य ही उसके दिमाग में इस आशय के आदेश भरे होंगे ताकि वह अपने ग्रह की श्रेष्ठता पर हमेशा अड़ा रहे।

अभियान को जल्दी ही पता लगने वाला था कि उपलब्धियों का वह घमण्ड झूठा नहीं था। जीव से फिर मिलने का वादा करके वे अपनी उड़नगाड़ी में कॉलोनी की ओर चल पड़े। सोच में वे इतने मगन थे कि उन्हें पृथ्वी-उदय देखने की भी फुरसत नहीं थी।

* * *

डॉ. राव से उनकी मुलाकात रास्ते में ही हो गई। "हम लोग आपके लिए काफी चिन्तित थे, अभियान" राव ने कहा, "रडार पर हमने आपके यान को भटकते हुए देख लिया था। पर आपकी और उस दानव की काफी गहरी छन रही थी। लग रहा था कि आपके लिए हमने नहीं, उसने बुलावा भेजा है।"

"दानव नहीं राव, यांत्रिक मानव।" अभियान ने राव को अपनी बातचीत का ब्यौरा देते हुए कहा, "मेरा अनुमान है कि उसके दिमाग में बहुत ही शक्तिशाली कंप्यूटर लगा हुआ है।

तुम जानते हो कि कंप्यूटर के सन्दर्भ में ही हम लोग याददाश्त में सूचना भरने की बात करते हैं। दूसरे, उसने अपना नाम संकेतक - तीन-तेरह-सोलह सौ छप्पन बताया। तीसरे, कंप्यूटर की भाषा में एक शब्द-चिह्न या समूह का एक ही अर्थ होता है, दो-तीन नहीं। शायद इसलिए ही वह तीन-तेरह के दो मतलबों के बारे में शिकायत कर रहा था। 'चार सौ बीस' के बारे में भी उसने कहा कि उसे मतलब खोज निकालने में दिक्कत होती है। वह कह रहा था कि जापानी भाषा अच्छी है। उसमें ऐसी कोई उलझन नहीं है। अरे, उससे मुझे याद आया, यह दिमाग खोलकर पढ़ना, भला क्या बला है?"

राव को हँसी आ गई, "दरअसल अभियान, वह वाकई एक बला है। इस जीव के पास एक कनटोप है। जिसे वह किसी अन्य के सिर पर रखकर अपने सिर से जोड़ लेता है। उसके बाद कोई आधा घण्टा वह कनटोप गूँ-गूँ की आवाज़ करता रहता है, और सिर में अजीब-सी गुदगुदी होती रहती है। इस दौरान आपके दिमाग की सारी जानकारी उसके दिमाग में चली जाती है। उसने मिलर, श्रीनिवासन और ओहिरा पर यह प्रयोग किया था। इसी वजह से उसे हिन्दी और जापानी भी आती है। लेकिन अभियान, मज़े की बात यह है कि उस प्रयोग के तुरन्त बाद इन तीनों की याददाश्त आश्चर्यजनक रूप से तेज़ हो गई थी। श्रीनिवासन को अपने छठे जन्मदिन पर पहने हुए कपड़ों का रंग याद था। दिनभर कॉलोनी में अच्छा-खासा तमाशा रहा। ये तीनों जन लोगों को अपनी याददाश्त का कमाल दिखाते रहे।"

अभियान हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। राव ने अपनी बात जारी रखी, "लेकिन उसे जिस दिमाग की तलाश थी, वह उसे नहीं मिला। उसे ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो ग्रहों के बीच संकेतों के आदान-प्रदान के बारे में पूरी जानकारी रखता हो।"

"चू-चू-चू, अगर मैं उसे बता देता कि मैं इस क्षेत्र का विशेषज्ञ हूँ, तो वह मेरी भी याददाश्त ताज़ा कर देता।"

"अरे नहीं अभियान, उसने हमें चेतावनी दी थी कि अगर किसी ने उसे गलत सूचना दी तो कनटोप उसके सिर पर तब तक चालू रहेगा, जब तक कि वह व्यक्ति पागल न हो जाए। और उसके पास गज़ब के आधुनिक उपकरण और शक्तियाँ हैं।"

"मसलन?"

"मसलन, हमने उस पर तीव्र चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव डालकर देखा तो उसने महज़ हथेली से उससे भी तीव्र चुम्बकीय क्षेत्र पैदा किया, और हमारे सारे चुम्बक बेकार कर डाले। हमने उसे एक धातु के जाल में लपेटकर उठा भी लिया था ताकि किसी क्रेटर (विवर) में डालकर

दफना दें। पर उसने आनन-फानन में अपने बदन से लेज़र जैसी, पर कई गुना तेज़, किरणें पैदा कर सेकण्डों में वह जाल काट डाला। उसके बाद उसने पता नहीं कैसे, भूकम्प के एक-दो झटके पैदा किए – छोटे झटके, पर इस चेतावनी के साथ कि अगर उसे और परेशान किया गया तो झटके काफी बड़े हो सकते हैं।"

"यानी यह यांत्रिक मानव एक टेढ़ी खीर है," अभियान ने कहा, "इससे निपटने में होशियारी बरतनी पड़ेगी।"

* * *

घर पर डॉ. राव की साथी, डॉ. गीता ने उनका स्वागत किया। डॉ. गीता स्वयं एक कंप्यूटर विशेषज्ञ थीं। उनकी चर्चा नाश्ते की मेज़ पर भी जारी रही। यह तय हुआ कि एक मीटिंग बुलाई जाए जिसमें इस जीव से निपटने के उपायों पर विचार हो।

चर्चा चल ही रही थी कि डॉ. राव के लड़के सन्दीप ने प्रवेश किया। अपना वातावरण-प्रूफ सूट उतारकर उसने अभियान को नमस्ते किया।

"कैसे हो, दीपू बेटे?"

"ठीक हूँ, अंकल। अंकल, आपको पता है, मैं अब छठी में पहुँच गया हूँ। हमारी टीचिंग मशीन का कहना है कि मैं रॉकेट के मॉडल काफी अच्छे बनाता हूँ। लेकिन अंकल, आप..." कहते-कहते वह रुक गया।

"हाँ-हाँ, बेटे! कहो!"

"आप वहाँ छठी क्लास को पढ़ाते हैं न?"

"लो, यह विज्ञापन यहाँ भी पहुँच गया। वैसे बेटे, पढ़ाता था – हूँ नहीं। इस साल मैंने मना कर दिया है।" सन्दीप की आँखों में ठण्डे पड़ते हुए उत्साह को देखकर उन्होंने जल्दी-

जल्दी बात पूरी की, "फिर भी बोलो, तुम्हें कोई काम है?"

"मुझे थोड़ा-सा पूछना था।" वह पास खिसक आया। डॉ. राव बरस पड़े, "अंकल वाले महाशय, अंकल उस अन्तरिक्ष की बला से निपटने आए हैं या आपको पढ़ाने?"

"अरे राव, पूछने दो यार, तुम्हारी मीटिंग को अभी एक घण्टा और है। क्या पूछना था, दीपू बेटे?"

"कुछ नहीं अंकल, सैटेलाइट का लेसन था। मैं बाद में पूछ लूँगा।" नाराज़ स्वर में सन्दीप ने कहा और 'मेरी बला से' का भाव चेहरे पर लेकर डोसा खाने में जुट गया।

* * *

प्रयोगशाला के समिति कक्ष में हुई बैठक में सभी लोग उपस्थित थे। अभियान ने बिना किसी भूमिका के मुख्य प्रश्न उठाया, "दोस्तो, अन्तरिक्ष से आया हुआ यह जीव हमारे लिए एक खतरा है। हालाँकि, अब तक उसने हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है, पर वह जब चाहे ऐसा कर सकता है। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम जल्द-से-जल्द उसे बेकार कर दें। मेरा अनुमान है कि वह अत्यन्त विकसित किस्म का, पर यांत्रिक मानव है।" उन्होंने अपने तर्क फिर एक बार दोहराए। "फिर भी, इस अनुमान की पुष्टि के लिए हम श्रीनिवासन और उसके बीच शतरंज की एक बाज़ी रखेंगे।"

"उसकी आवश्यकता नहीं है, प्रोफसर। एक बात और हुई थी, जिसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि वह यांत्रिक मानव है।" ओहिरा ने कहा।

"कैसी बात?" सारी नज़रें ओहिरा पर थीं।

"अभियान, डॉ. राव ने उससे बातों-बातों में कह दिया था, 'तुम बहुत टुच्चे आदमी हो।' इस पर वह कुछ देर तक चुप रहा, फिर बोला, 'यह टुच्चे क्या होता है?' बतलाने पर उसने कुछ अन्यमनस्क-सा होकर कहा, 'यह शब्द मेरी याददाश्त में नहीं है। कहीं खो तो नहीं गया?' ऐसा कथन कंप्यूटर मस्तिष्क के बारे में ही सम्भव है। दूसरी बात यह कि श्रीनिवासन को खुद 'टुच्चा' शब्द मालूम नहीं है और इस जीव ने श्रीनिवासन से हिन्दी 'सीखी' है।"

"मुझे भी लगता है कि वह ज़रूर यांत्रिक मानव है, और उस स्थिति में उसके दिमाग में ज़रूर इलेक्ट्रॉनिक सर्किट होंगे जिनमें विद्युतधारा बहती होगी। हम तीव्र विद्युत क्षेत्र पैदा कर उसके दिमाग को खराब कर सकते हैं।" चेसलॉव ने सुझाव दिया।

"मेरा भी यही विचार था," अभियान ने बात आगे बढ़ाई, "दरअसल, मैं अपने साथ तीव्र विद्युत क्षेत्र पैदा करने वाली मशीन ले भी आया हूँ। लेकिन उसमें एक छोटी-सी दिक्कत है। विद्युत क्षेत्र के तीव्रतम होने में कुछ समय लगता है। उतनी देर में अगर जीव को पता लग गया तो हम सबकी छुट्टी। वह और कुछ नहीं तो एक-आध दर्जन भूकम्प, चाहो तो टाइटन-कम्प कह लो, बरपा देगा।"

"साथियो, क्यों न हम शतरंज खेल-खेल कर उसका दिमाग खराब कर दें? मैं सोच-सोच कर ऐसी बचकानी चालें चलूँगा जो उसके दिमाग में न हों। कहीं-न-कहीं उसका दिमाग जाम हो जाएगा सोचते-सोचते।" श्रीनिवासन ने कहा।

"पागल हो?" डॉ. गीता ने झिड़का, "ऐसा कभी नहीं होगा। उसे शतरंज के नियम जो मालूम हैं। कुछ समय बाद जब सारी याददाश्त छान मारने के बावजूद उसे कोई चाल नहीं सूझेगी तो वह नियमों के मुताबिक कोई चाल चलेगा। उसके जैसे विकसित यंत्र के लिए, इसमें सब मिलाकर एक या दो मिनटों से ज़्यादा समय नहीं लगेगा।"

"ठीक है, पर शतरंज खेलकर उसे उलझाए तो रख सकते हैं।" श्रीनिवासन का उत्साह कायम था, "तब तक यदि विद्युत क्षेत्र काम कर दे..."

"यह सम्भव है।" अभियान ने कहा, "लेकिन हम एक ही तरकीब के भरोसे बैठे नहीं रह सकते। और उपाय भी सोचने पड़ेंगे।"

"मेरा एक सुझाव है।" यह थे अमरीकी रॉकेट विशेषज्ञ रॉबर्ट, "क्यों न हम उसे पृथ्वी ले जाने के बहाने ले चलें और बीच रास्ते में रॉकेट को बम से उड़ा दें? इसमें पायलट की जान को पूरा खतरा है, पर आवश्यकता हो तो मैं यह काम करने को तैयार हूँ।"

सबने सराहना भरी नज़रों से रॉबर्ट की ओर देखा। वह काफी गम्भीर था।

"एक छोटी-सी समस्या है।" ओहिरा ने कहा।

"वह क्या?"

"अगर मैं उस जीव की जगह होता तो पहले पायलट का दिमाग पढ़ लेता और फिर खुद यान चलाता, उस हालत में..."

"चलाना तो बाद की बात है, वह तो पढ़कर ही पायलट के इरादे जान लेगा। पर अगर कोई तरकीब कामयाब नहीं होती तो हमें शायद यही करना पड़े। खतरा है, पर वह तो उठाना पड़ेगा।"

"ओह नो, प्रोफेसर! एक बात तो हम सबके दिमाग में आई ही नहीं।" डॉ. राव, जो अब तक चुप बैठे थे, बोल पड़े, "अगर अभी कहीं जीव के दिमाग में आपका दिमाग खोलकर पढ़ने का फितूर आ गया तो सबकी छुट्टी। जहाँ हम उसका खात्मा करने की सोच रहे हैं, वह अकेला ही हम सबका खात्मा करके पृथ्वी की ओर चल पड़ेगा।"

सबके शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई। डॉ. राव की बात अप्रिय थी पर उसमें वज़न था। एक बार यान चलाने की जानकारी मिलने पर जीव बड़े आराम-से पृथ्वी पर पहुँच सकता था, और अपनी शक्तियों के सहारे वहाँ के वैज्ञानिकों को अपने ग्रह पर सन्देश भेजने को बाध्य कर सकता था। कमरे की ठण्ड के बावजूद अभियान को पसीना आ गया। वे सोच भी रहे थे कि 'अच्छा हुआ, अब तक सुदूर ग्रहों में संचार के तरीके की खोज, पृथ्वी पर, वे या और कोई वैज्ञानिक नहीं कर पाया है'। इस खयाल से वे तुरन्त सम्भल गए।

"दोस्तो, डॉ. राव की बात सही है। वह जीव हममें से किसी का भी दिमाग पढ़ सकता है और उसके बाद यान लेकर उसका धरती पर पहुँचना लाज़िमी है। अत: यह ज़रूरी है कि हममें से कोई एक व्यक्ति औरों को बताए बिना, यान का एक-आध पुर्ज़ा निकालकर कहीं छिपा दे, ताकि अगर यान चलाने की जानकारी मिल भी जाए तो वह यान लेकर उड़ न पाए। डॉ. राव ने पहले ही सन्देश देकर अन्य यानों को टाइटन पर उतरने से मना कर दिया है।" सबने सहमति में गर्दन हिलायी। "और दूसरी बात यह है कि हमें किसी तरह उसे यह विश्वास दिलाए रखना है कि हम उसका सहयोग कर रहे हैं ताकि उसे हमारे दिमाग पढ़ने या पृथ्वी पर जाने की आवश्यकता महसूस न हो।"

चर्चा काफी देर तक चली। लेकिन कोई कारगर हल सामने नहीं आया। यह तय हुआ कि विद्युत क्षेत्र का प्रभाव डालकर जीव के दिमाग को खराब करने की कोशिश की जाए।

* * *

उड़नखटोले से उतरते हुए अभियान को देखकर जीव ने हाथ हिलाया,

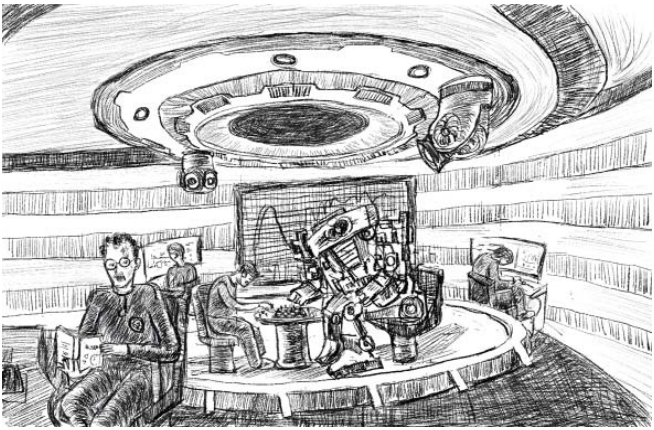

"आओ प्रोफेसर, मैं तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रहा था। मैंने अपने ट्रांसमीटर की करीब-करीब पूरी मरम्मत कर ली है। अब संकेत उपकरण ठीक करने में तुम्हारी मदद की आवश्यकता है।"

खबर सुनकर अभियान का दिल डूब गया। पर प्रकट में वह बोले, "बधाई हो!" ट्रांसमीटर को देख अभियान दंग रह गए। इतना आधुनिक और शक्तिशाली उपकरण उन्होंने पहले नहीं देखा था। "यह कमबख्त तो ब्रम्हाण्ड के एक छोर से दूसरे छोर तक संकेत भेज सकेगा!" उन्होंने मन-ही-मन सोचा। अच्छा था कि संकेत निर्माण करने का उपकरण पूरी तरह ध्वस्त था।

उपकरण का काफी देर तक मुआयना करने के बाद अभियान ने मौन भंग किया, "मुझे तो ऐसा लगता है, तीन-तेरह, कि यह उपकरण नए सिरे से बनाना पड़ेगा। उसके लिए मुझे कुछ समय चाहिए सोचने को। वैसे तुम्हारे ट्रांसमीटर को देखकर मैं दंग रह गया हूँ।"

"क्यों नहीं, हमारे ग्रह पर जो बना है।" जीव की आवाज़ में घमण्ड का पुट स्पष्ट था। 'अच्छा है, अगर यही घमण्ड तुम्हें ले डूबे।' अभियान ने सोचा। ऊपरी तौर पर वे बोले, "चलो, यान के अन्दर चलते हैं। मैं तुम्हारे संकेत-उपकरण की समस्या के बारे में कुछ किताबें देख लूँ, तब तक तुम श्रीनिवासन के साथ बैठकर शतरंज की एक बाज़ी खेलो।"

"यह ठीक है," जीव ने कहा, "मुझे शतरंज खेलना पसन्द है।" यान में श्रीनिवासन के अलावा अन्तरिक्ष सूट पहने हुए और तीन-चार लोगों की उपस्थिति जीव ने दर्ज की। लेकिन वह आश्वस्त था। एक तो पुराने अनुभव की वजह से और दूसरा अभियान के सहयोगपूर्ण स्वर के कारण। वह आश्वस्त था कि वे लोग

आक्रमण की गलती नहीं दोहराएँगे। फिर भी उसने अपनी निरीक्षण व्यवस्था को 'सतर्क' की स्थिति में डाला और शतरंज खेलने बैठ गया।

अभियान एक किताब के पन्ने पलटने में व्यस्त हो गए। श्रीनिवासन ने कुछ प्रचलित चालें चलीं जिनका प्रचलित जवाब जीव की ओर से मिला। इस बीच चैसलॉव विद्युत क्षेत्र पैदा करने वाली मशीन को जीव के शरीर पर फोकस कर मशीन चालू कर चुके थे।

श्रीनिवासन की अगली चाल काफी बचकानी थी। जीव को जवाबी चाल चलने में थोड़ा समय लगा। अगली चाल और भी बचकानी थी। जीव ने अपनी याददाश्त में उसका जवाब ढूँढ़ा, जवाब नदारद था। थोड़ा अन्यमनस्क होकर उसने शतरंज के सारे नियमों पर दिमाग दौड़ाया और चाल चली। इस बार उसे कुछ अधिक समय लगा।

विद्युत क्षेत्र की तीव्रता बढ़ती जा रही थी।

अगली चाल में श्रीनिवासन ने हाथी को आगे बढ़ाते हुए उँगली से एक प्यादा आगे की ओर सरका दिया। दो-तीन चालों के बाद जीव की याददाश्त में कुछ खटका। बिसात पर प्यादे की जगह वह नहीं थी जो होनी चाहिए थी। उसने सारे नियम ध्यान से दोहराए और पिछली चालों के दौरान विभिन्न मोहरों की स्थिति को फिर से याद किया। कुछ गलती ज़रूर थी।

विद्युत क्षेत्र की तीव्रता अब अधिकतम हो गई थी। अभियान ने अपने माथे का पसीना पोंछा।

खटाक की आवाज़ आई। सभी नज़रें जीव की ओर मुड़ गईं। वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। अभियान ने किताब से नज़रें हटाकर प्रश्नार्थक मुद्रा में जीव की ओर देखा, मानो, उन्हें कुछ पता ही न हो।

...जारी

सतीश बलराम अग्निहोत्री: भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व अधिकारी और अब आई.आई.टी. मुम्बई में प्राध्यापक। जन्म रत्नागिरी ज़िले के देवरुख गाँव में हुआ। बचपन बिहार के दरभंगा शहर में गुज़रा जहाँ स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की। इसके बाद आई.आई.टी. मुम्बई से फिज़िक्स और फिर पर्यावरण विज्ञान में एम.टेक. किया। फिर 1980 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में ओडिशा राज्य एवं केन्द्र सरकार में कई विशिष्ट पदों पर 35 साल सेवारत रहे। हिन्दी में विज्ञान कहानियाँ और लेख लिखने की शुरुआत तब की जानी-मानी पत्रिका 'धर्मयुग' से हुई। व्यंग्य रचनाएँ भी लिखते रहते हैं। सम्पर्क - satishagnihotri1955.in

सभी चित्र: हरमन: चित्रकार हैं। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से फाइन आर्ट्स (चित्रकारी) में स्नातक और अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर। भटिंडा, पंजाब में रहती हैं।